



3V45CT



6

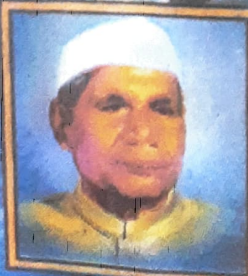
प्रकृति की सीख

पर्वत कहता शीश उठाकर,
तुम भी ऊँचे बन जाओ।
सागर कहता है लहराकर,
मन में गहराई लाओ।

समझ रहे हो क्या कहती है
उठ-उठ गिर-गिर तरल तरंग।
भर लो, भर लो अपने मन में,
मीठी-मीठी मृदुल उमंग।

पृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो,
कितना ही हो सिर पर भार।
नभ कहता है, फैलो इतना,
ढक लो तुम सारा संसार।।

— सोहन लाल द्विवेदी



फतेहपुर जिले के बिंदकी नामक कस्बे में जन्मे कवि सोहन लाल द्विवेदी (सन् 1906-1988) की कविताओं में राष्ट्र-प्रेम तथा राष्ट्रीय जागरण का स्वर मुखर है। 'दूधबतासा' तथा 'शिशु-भारती' इनके प्रसिद्ध बालगीतों के संग्रह हैं।



शब्दार्थ

तरल तरंग = पानी की चपल
या चंचल लहर।

मृदुल = कोमल
उमंग = जोश, उत्साह

धैर्य = धीरज

1. बोध प्रश्न : उत्तर लिखिए -

- (क) पर्वत क्या संदेश दे रहा है ?
- (ख) तरंग क्या कहती है ?
- (ग) धैर्य के संबंध में पृथ्वी का क्या संदेश है ?
- (घ) संसार को ढक लेने की सीख कौन दे रहा है ?

2. नीचे स्तम्भ 'क' में प्रकृति के कुछ अंगों के नाम लिखे गए हैं। स्तम्भ 'ख' में उनसे मिलने वाली सीख गलत क्रम में लिखी गई हैं, उन्हें सही क्रम में लिखिए -

'क'

पर्वत
सागर
तरंग
पृथ्वी
नभ

'ख'

कभी धैर्य न छोड़ो
ढक लो तुम सारा संसार
मन में गहराई लाओ
हृदय में मृदुल उमंग भर लो
ऊँचे बन जाओ

3. निम्नलिखित पंक्तियों के भाव स्पष्ट कीजिए -

- (क) सागर कहता है लहराकर, मन में गहराई लाओ।
- (ख) पृथ्वी कहती, धैर्य न छोड़ो, कितना ही हो सिर पर भार।
- (ग) भर लो, भर लो अपने मन में, मीठी-मीठी मृदुल उमंग।
- (घ) नभ कहता है फैलो इतना, ढक लो तुम सारा संसार।



4. **सोच-विचार : बताइए -**

हम सब हर समय कुछ न कुछ नया सीखते रहते हैं। हमारे आस-पास बहुत कुछ पढ़ा होता है, जो सीखने में मदद देता है। बताइए, आपके आस-पास ऐसी कौन-कौन सी चीजें हैं जो आपको कुछ न कुछ सिखाती हैं।

5. **तुम्हारी कलम से -**

लिखिए, क्या सीख मिलती है -

- वृक्षों से
- नदियों से
- फूलों से
- कोयल से

6. **अब करने की बारी -**

- (क) पर्वत और लहराते हुए सागर का चित्र बनाइए।
- (ख) 'प्रकृति वर्णन' से संबंधित कविताओं का संकलन कीजिए।
- (ग) इस कविता को कंठस्थ कर कक्षा में सुनाइए।

7. **मेरे दो प्रश्न : कविता के आधार पर दो सवाल बनाइए -**

1.
2.

8. **इस कविता से -**

- (क) मैंने सीखा -
- (ख) मैं करूँगी/करूँगा -

यदि मनुष्य कुछ सीखना चाहे, तो उसकी हर भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।

— महात्मा गांधी

